नव बेर की कमाल

श्री गणेशाय नमः

श्री स्वामी समर्थाय नमः

ॐ नमो आदेश गुरु को

ध्यानमात्र से जागृत हुए सद्गुरु स्वामी।

ऊनकी नजर का बहुत बडा है पेड।।

लगे है उसमे सारे बहोत बेर।

माया को नाश करे न होवे देर।।

ध्यान मात्र मे एक बेर खाया।

लिला से उसकी कईल न रहे शाप और बाधा।।

करके शाप मुक्त जीवन हुआ सिधा।।१।।

खाके दुसरा बेर बुद्धी हुई अगाध।

रोगीयों के रोग का करने लगे वेध।।

वेध करवाके सुझाया दवा और दुआ।

तिनों दोष धातु मल में आश्रीत होके बनावे रोग।।

ज्वराती सार उन्माद अपस्मार शिरोरोग।

नेत्र नासागत वा अन्य सारे भारी गद।।

करके दवा और दुआ की बारीश मस्त।

खातमा कर रोगों का जीवन करे स्वस्थ।।२।।

खाके तिसरा बेर हुई जागृत अवलिया शक्ति।

भुतादी से जो फसल को करे बिमार।।

जारण मारणादी बनावे उसे खोखला।

करके क्षीरधार दिखावे दवाईयों का दाखला।।

सफाया कर डाकीणी आदी जारण मारणादीक।

ऐसी करके कमाल होवे सत्य का मालीक।।३।।
सारे जगत की बुरी आत्मा बुरी नजर करने लगे सैर।
करके निंदा शक्ति की सोए मन के बगल में बहोत देर।।
नाश करके ऊसको जीवन करे साफ सुधरा।
खाके चौथा बेर स्वामी करे नजर का फवारा।।४।।
थोडा खट्टा थोडा मीठा रहे है पाचवा बेर।
खातमा कर बाल रोग का करे सुख की सैर।।
ग्रहादी बाधा भागने लगे दबाके दुम।
देखके स्वामी जी को मजबुर होके रहे है सुम।।५।।
मारके पापी बुद्धी रहे है बेर छठा।
अघोरी विद्या नाश करे करे घड से कटा।।
वाह रे छठे तेरी है कमाल।
स्वामीजी के वरदान से पाए तुने वरदान।।६।।
होए विपुल लक्ष्मी सेवन करके बेर सातवा।
अलक्ष्मी दूर करके करावे मुझे धनवान।।
ऐसा करके स्वामी जी का पुरा ध्यान।
संपत करके बनावे सबसे समृद्धीवान।।
हुए विपूल संपत्ती बाग बगीचा मोहक।
वाह रे तेरी लिला ऐसा विचार करके भावक।।
दूर करे कंगाल भर दे मेरी पूंजी।
वाह रे तेरी कमालरहे सबसे सांझी।।७।।
आठवा बेर हस्तभुत करे आठ सिद्धी।
आठो सिद्धी करे सांभाल करके स्वामी जी भक्ति।।
रक्षा करके दिशा से आठ रहे दिक्पाल।

उपर निचे से स्वामी जी होवे रखपाल।।
करके उजाला करे रोशन मेरा घर।
पाके गुरु का वर भरे सुख की घागर।।८।।
खाके नवम बेर हुए सामर्थ्यशाली।
नाश करके अहंभाव करावे भाग्यशाली।।
जो बुरा देखे बुरा सोचे पडेंगे स्वामी जी के पैर।
सुखी होके करेंगे स्वामी पथ की सैर।।
अगर ना माने तो सद्गुरु रहे पीछे।
रक्षा करके मेरी फल दे अच्छे से अच्छे।।
करे बदसुरत दुर्भागी उन लोगों को।
देंगे सुकुन रक्षा करके इस सुभागी को।।९।।
करके उजाला मेरा जीवन हुआ पावन।
कोटी सुरज का तेज देके दुख का करे धावन।।
लाभ होके वरदहस्त स्वामीजी का।
ऐसे सवारे जीवन लेके प्रसाद गुरु माई का।।
ऐसी लिला पेड के बेर मे है समाई।
धो के जीवन खुशाली से करो मेरी भलाई।।
गुठली है उनकी बहोत ही सक्त।
बुरी नजर आत्मा को जल्द मे मारे फकत।।
लेके सुख का पोटला जीवन हुए तंदुरुस्त।
छोडे भोग का पोटला स्वामी जी का रहे वरदहस्त।।
जीवन है कोठी उसमें स्वामी जी की मुर्ती।
संवारे जीवन देके मौलिक किर्ती।।
शब्द साचा पिण्ड काचा सारे भगवान तेरे साथ।

सारे नवनाथ जी देंगे तुझे हाथ।।
तेरी हो स्वामीजी से भलाई।
भगवान दत्त की होके दुहाई।।
सत्यनाम आदेश गुरु का
अगर चुके तो मुझे माफ करना।
सदा ही तेरे चरणों में रखना।।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा
।।हरी ॐ तत्सत।।